What will I write 9

In the morning, by the side of this neem tree,
I like to keep sitting on the terrace quietly,
The open sky is in front of me,
The strange colors of the space is the game of time—
The sparrow doesn't know how to stay quiet;
It is constantly chirping sitting the branch of the neem tree:
The crow sitting on the dish antennae,
Is constantly rubbing its beak by the edge of the dish.
I'm thinking of writing so many more things
That happens around me—
Life is painting a canvas with the happiness of living.

Or shall I write

About the fish seller of today?

He is hovering around the localities with a big basket on his head.

He is screaming, "Bengal Carp, Pufferfish,

The barramundi, anybody wants?"

I am standing on one corner of the terrace,

I told him to put down the basket on the road.

One Bengal Carp, a big Pufferfish and a Barramundi,

It's two thirty rupees on average for all the fish in the basket.

The price per kilo is set,

One weight, 1kg,

Another is 500gm,

Then, putting the cutter iron, it's wood, the basket

On one side of the weighing machine,

The fish seller is weighing the fish.

After a lot of struggle and strategies,

All the fishes weighed up to 5kg900gm,

Which costs thirteen hundred and fifty seven rupees.

"Brother I left home at 4am,

The trains are closed due to lockdown.

It took me two hundred rupees and changing five autoes

To reach Garia junction at 7am,

Since then I am hovering around the localities after buying fish,

Now it's 12 noon."

What will I write?

When I asked about how much profit he made, he said,

"Excluding the journey fare and tiffin cost,

If I have two hundred rupees, it's enough!

It will take sunset to reach home

I don't know when will I eat then

Some soaked rice and onions!"

"Brother please round it to fourteen hundred please,

Or else what will I have with me after so much of hard work?"

It's just a two hundred rupees profit

After working so hard for fourteen hours amidst this pandemic!

What will I write?

After hearing I'll give fourteen hundred rupees,
He is muttering, "May Allah bless you",
And sat on the road to cut the fishes.
Now a couple of cats came diving in,
I told him to throw at them the excluded extra parts,
And they are behaving like crazy
With these leftover cut portions of the fishes.
The street cats, dogs, crows,
And even the giant ants.
This fish seller,
He is cutting 6kgs of fish and still praying to Lord Almighty for me.
The glass of my specs are turning foggy.
What will I write?

Life is still painting a canvas on its own –
In the distance, the falcons are disappearing in the sky amidst the clouds
Again they are appearing
Will I write more?
Or shall I write about this poor man's lifestyle?
The poor rickshaw pullers, fish sellers, vegetable sellers
The street animals are with burning hunger
What will I write, I'm thinking
And tears are rolling down off my eyes.

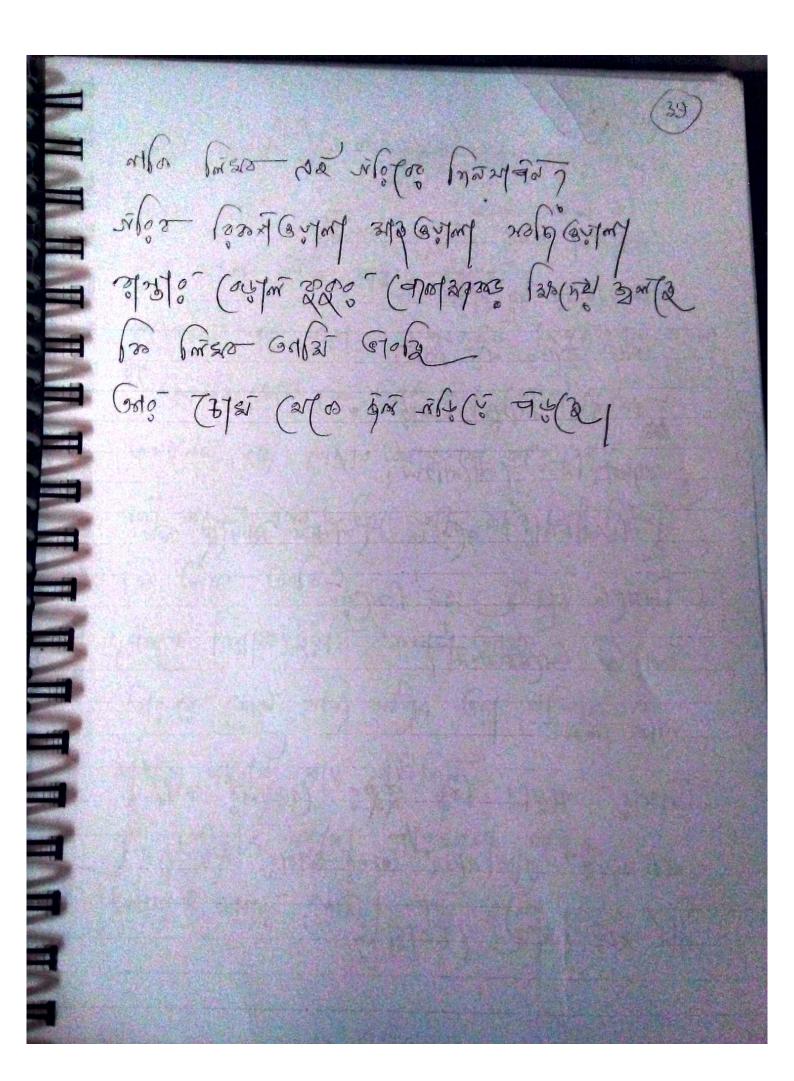
Goo Priso Ontar? (3) अवन्ति के कि कि कि कि कि कि कि कि क्रांत के निर्ध कर्ट राम भागित लगानी है लाली मारिय अवाम (अन्त जिल्लाम 33/4[Do- Courte 52 sulus (2) 2) १ देश मार्थि केच भाषा मार्थ मार्थ (०३० प्रमादि (तिषत् दिष्टि (अप्राप्तिकं एक त्यांण वित्र ल्य ल्या (प्या: @ के - वर्ष कावर अव (अंद रिका श्रीम विषय विषये विषये लिंड्ड - ब्रिनी कित्ती कि कि कि कित कित (विदेश अपवर्षित योदाः जिन्नम् योग्न कृति जोन्न दिन्ति दिन्ति दिन्ति Mon liss = (242/003 - 345 @ May 2 254)

अधिक अर्थ अर्थ मित्र नामित नामित कि । १९८ वर्ष के उठके कि अविषये अपर में साई माई में सिक्ते अपर (LOLM) 345 (M(ON) न दिश्वा का(गर् प्रक (न्यान म्परिन् (aco डोट्ट थेअए ए प्रमाण डो आर्टी अभि अटिष्ण , पण्ये में (लिपाश्चात किर्ण माः (मा निहिंद के देश विषय सिंह के देश दिल्स सिंब (select 1 3 / 8 as 5 m) Opin Topente piech ० अली में दिया भीशा न त्वा में भे नि विक भे नि विका > मारिनाक्तीः Acologo धारिना 345 342 345 (3 Jant 1

स्थित कर - के अरडे करडे कर का कि के विशेष क्षा नाम किथि भगें भाषा। अपा (िंध आत्रक द्राष्ट्रा (777- (618- 618 (47) 6 (4866) + (3/2/2/2) who worked (in suit) व्याद स्थाप तिये वालि यहिंगी (अर्थि एपर्यान्त्र हेर्स होना इडि अवर्षेस सम् अदिर् (वर्ड (याम व ्राः वह अपने हिल्ला नामित नामित नामित मेंद्रि संदर्श WENT A(2 LAW) A(412-1 3) 100 MEST GARAY 30 mle 8(2 (2)(2)2 x 024/2 SW/ml ed मानि मिटि इडि विश्वाप हेंडि अंग प्रि. pri Had stockers Gilvas 1

11/2 / 3/2016 Pass (2 24/A) 5 (2 34/0) (10 to osy 24(4 (00 2)(4) र्ता अली-(ब्रंगेर्ड । 33 ८८ अर रिवर्षा - (स्मेन ल्या व्या यह यह यह क्या कि कि अपटिन अपटिन अपटिन विश्व अपटिन न पर अविभार अपि (धार्म रमि इमार्स्स (अपि Ex alsol well 120 MESS GAISI? ज्यिक हिलाती हान (प्रति वि िति अधि अधि (अपम् विन्युं ह्यान विन्युं हिल्ली अधिया वे िप्तः डी अर्र अर्थ चुले आई अपिति। त्यह किम छीउँ के रिअपमा कर्ज अवर्षण चिन्न 34/30 50 mad salmad , \$ (2 \$ (2 NUC DIMME)

एमट् एडी चीमालड माली क जीमाला स्टि अर रहिन्म कार्य अर जिए न डीज़िं (क्षेप डेंडेंट क्षेप प्रश्निक क्षेरिक @WY 12-41-54 1 ्र किं अविकिष्ण र केंद्र कि अप अप के अपनि जिल्ला है अर्डा है जिन्न हैं जैसे (यह) कर्ड हिलाई (सिश्च दुभुअपंट न्यून अपन्य) ठ(ट् त्यूयप्र (कि लिखा जारियों ? बीर्ग (क्टार्स केटि केटिक हिल्ली किन्नेंग दें ने निमार्ड राष्ट्र (3/5/ho-3/6) 2 Cotolo-30(0 25/5) () mgs- On (of)



क्या लिखूं मैं ?(9)

```
क्या लिखूं मैं ?
```

सुबह सुबह इस नीम के पेड़ से लगे होकर,

छत पर चुपचाप बैठे रहना, मुझे अच्छा लगता है,

सामने उन्मुक्त गगन,

महाशून्य में बदलते रंगों का अद्भुत खेल,

गौरैया चुप रहना नहीं जानती,,

लगातार पुकारती जा रही है,नीम की उन टहनियों पर बैठी,,

डिश ऐन्टेना के ऊपर बैठा हुआ कौआ,

डिश के कोनों पर होठ रगडता ही जा रहा है,

आँखों के सामने और न जाने कितना कुछ घटित होता जाता है,

सोच रहा हूँ उनको लेकर लिखूं,

जीने की चाह में जिंदगी तूलिकाओं से चित्र बनाती है,

या लिखूं,

आज के मछलीवाले की कहानी?

सिर पर टोकरी लिए इस मुहल्ले से उस मोहल्ले तक घूमता फिर रहा है,

चिल्लाकर पुकार रहा है,"कतला मछली,पारषे मछली,भोला मछली लेंगे ?"

मैं छत के एक कोने में खडे होकर..

उससे टोकरी नीचे उतारने को कहता हूँ,

एक कतला,एक बड़ी सी भोला मछली और एक पारषे,

टोकरी की सारी मछलियां लेने पर,

230 रूपए प्रति किलो दाम तय हुआ,

एक वजन एक किलो,

एक पांचसौ ग्राम,

मछिलयों को काटने की एक कटारी,कटारी को पकड़ी हुई लकड़ी,एक टोकरी,

सबकुछ एकतरफ तराजू पर चढ़ाकर,

मछलीवाले मछलियों को तौल रहा है।

बहुत संघर्ष करने के बाद,कुल मिलाकर सारी मछलियों

का वजन हुआ,पांच किलो नौसौ ग्राम,1

यानि तेरहसौ सत्यान्वे रूपए।

"बाबू ,प्रातः चार बजे निकला हूँ,लॉक डाउन में ट्रैन बंद हैं ,

पाँच बार ऑटो बदलकर गड़ियाहाट मोड़ पर आते आते ही,

200 रूपए खर्च हो जाते हैं,सुबह सात बज जाते हैं,

फिर मछलियां खरीदकर मुहल्लों में घूमता फिर रहा हूँ,

अभी दोपहर के बारह बज रहे हैं। "

क्या लिखूं मैं ?

लाभ कितना होता है,पूछने पर बोला,

"जाने-आने के खर्चें,टिफ़िन के खर्चें,को छोड़ भी दे,

तो 200 रूपए बच जाए ,यही काफी है।

घर लौटते लौटते शाम हो जाएगी।

फिर पता नहीं कब खाना खाऊंगा,

दो पियाज के साथ थोड़ी बासी भात,"

"बाबू,पूरा ही चौदहसौ कर दीजिए न,

वरना इतनी मेहनत के बाद आखिर बचता ही क्या है ?

इस कोरोना के दौरान चौदह घंटे मेहनत करके, केवल 200 रूपए के लाभ!

क्या लिखूं मैं?

मैं चौदहसौ रूपए दूंगा,सुनते ही मन ही मन कहने लगा,

"अल्लाह !आपका भला करे।"

और सड़क पर मछली काटने बैठ जाता है,

अब तीन -चार बिल्लियों ने मछली पर हमला कर दिया।

मैंने उन्हें मछली के बचे कूचे हिस्सों को फेंककर देने को कहा।

और वे पागलों की तरह फेंके गए मछली के काटों को लेकर

लड़ने लगी,

सड़क के कुत्ते-बिल्ली,कौए,

यहाँ तक कि काली चींटियां भी,लड़ने लगी।

वो मछलीवाला,

छः किलो मछली काटते हुए भी,अल्लाह के पास,

मेरे लिए दुआएँ माँग रहा है।

मेरे चश्मे के शीशे धुंधले होते जा रहे हैं,

क्या लिखूं मैं ?

जिंदगी अभी भी अपने ही ख्यालों में खोयी,

चित्र बनाती जा रही है,

दूर कही बाजपक्षी शुन्य में समाया जा रहा है,

बादलों का राज्य फिर से खिल उठता है,

और भी लिखूं?

या लिखूं इस गरीब की दिनचर्या?

गरीब रिक्शेवाले,मछलीवाले,सब्जीवाले,

सड़क के कुत्ते-बिल्ली,कीड़े मकौड़े भूख से तड़प रहे हैं,

क्या लिखूं मैं सोचता हूँ ,

और आँखों से आँसू बहते जा रहे हैं।